केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)

परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरे

विषय Subject : Hindi Elective (002)

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Monday 18·03·2013

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को लिखें
Write Code No. as written on the top of the Question paper : 29/3

अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका(ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book(s) used :

यदि शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हैं तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C

[illegible]

B=Blind, D=Deaf & Dumb, H=Physically Handicapped, S=Spastic, C=Dyslexic

क्या लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हां / नहीं
Whether writer provided : Yes / No

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)

SENIOR SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION (CLASS XII)

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, DELHI

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने / हमने इस उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन प्रश्न पत्र के समुचित सेट के अनुसार और पूर्ण रूप से मूल्यांकन पद्धति के अनुसार किया है।

Certified that I/we have evaluated this answer book according to the correct set of question paper and strictly as per the marking scheme.

1. क) लोकतंत्र का शाब्दिक अर्थ है - लोगो का तंत्र अर्थात् जहाँ लोगो का शासन चलता है। वह तंत्र या शासन जो लोग (आम जनता) के द्वारा चलाई जाती है, लोकतंत्र कहलाती है। इसमें जनता चाहे तो अपनी माँगो को पूरा करवा सकती है।

ख) लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ 'मीडिया' को कहा जाता है। क्योंकि मीडिया द्वारा ही लोकतंत्र के दायित्व, क्रियाशीलता और कार्य - सीमा तय होती है। लोकतंत्र की गरिमा मीडिया की ही ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और विश्वसनीयता पर निर्भर करता है।

ग) लेखक मीडिया को लोकतंत्र के 'चौथे स्तम्भ' के रुप में एक सीमा तक ही ठीक मानता है क्योंकि मीडिया के दायित्व, क्रियाशीलता और कार्य - सीमा के बारे में कोई प्रामाणिक नियम - विनियम नही है, ताकि आत्मनियंत्रण या स्वयं पर अकुंश न होने से कभी - कभी अपनी सीमा का उल्लंघन कर बैठता है।

घ) मीडिया अपने ऊपर कोई अंकुश इसलिए नहीं लगाने देता, क्योंकि
(i) मीडिया लोकतंत्र के राज में अपने आप को पूर्णत स्वतंत्र रखना चाहता है।

(ii) मीडिया अपने आप को लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रुप सर्वोपरि समझता है और मानता है कि लोकतंत्र की सफलता मीडिया की ही देन है।

ङ) निरकुंश मीडिया से प्रायः निम्न प्रकार की गलतियाँ होती है :-

(i) मीडिया निरकुंश होने की स्थिति में स्वय मनमाना करने लगता है और अपनी सीमा को भूल जाता है।

(ii) मीडिया अभिव्यक्ति एवं मूल अधिकार की स्वतंत्रता की आड में गलत काम कर देता है।

इससे बचाव के लिए मीडिया की सीमा तय करनी चाहिए ताकि वह अपनी मर्यादा बनाए रखे।

च) मीडिया की भूमिका को निम्न रुप में सराहा गया है :-

(i) लोगों में जागरुकता लाने में।

(ii) भ्रष्टाचार या अन्य विकृतियो के विरुद्ध जनमत बनाने में।

(iii) लोकतंत्र को सफल बनाने में।

छ) उक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक 'लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका' होनी चाहिए।

ज) संविधान मे मीडिया के बारे मे कोई उल्लेख न होने पर भी वह अपने आप को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहता है।

झ) वि - उपसर्ग
ता - प्रत्यय

ञ) उल्लंघन → उत् + लंघन
भ्रष्टाचरण → भ्रष्ट + आचरण

2) क) स्वतंत्रता का सीधा क्रम श्रम, जमीन और अनाज है। इसका अभिप्राय है कि जो मेहनती है उसकी के पास जमीन भी होगी और वह उस जमीन में श्रम से अनाज भी उगा पाएगा

ख) आजादी से हमें निम्न अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाते है :-
क) परिश्रम कर अनाज /फल पाने का अधिकार।
ख) अपने शोषणों का विरोध करने का अधिकार।

ग) मेरे विचार मे स्वाभिमानी की भाषा सरल न होकर कटु होती है

उसकी हर भाषा से बेईमानी, झूठा झलकती है परन्तु भिखमंगो की आवाज में उसकी गरीबी एव ईमानदारी, बेबसी झलकती है।

घ.) कवि युवको को गरुड कहकर उनसे अपेक्षा करता है कि युवक भी गरुड की तरह सभी कठिन परेशानियों को झेल कर इस उन्मुक्त गगन में अपनी मंजिल को प्राप्त करे।

ङ.) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहते है कि अगर मनुष्य अपनी इच्छा को प्रबल कर ले तो उसे अपनी चीजो की प्राप्ति आसानी से हो सकती है।

'खण्ड 'ख''

3.) ग) 'क्या नहीं कर सकती नारी'

"कोमल है कमजोर नहीं तू
शक्ति का नाम ही नारी है
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी है"

नारी अर्थात् जग की विधाता, अर्थात् जग को चलाने वाली

देती। नारी के अस्तित्व की जानकारी केवल एक स्त्री या नारी ही जान सकती है। नारी की शक्तियो का अंदाजा अभी तक संसार को नहीं मिल सका है।

आज इस आधुनिक युग में जहाँ एक ओर नारी को पूजनीय माना जाता है और तरह - तरह आरक्षण एवं सम्मान दिए जा रहे हैं, वही दूसरी ओर उसी नारी को मिटा डालने की जी-जान से कोशिश की जा रही है जिसका उदाहरण हम रोज संचार के माध्यमों द्वारा प्राप्त करते है। हाल ही मे 16 दिसम्बर 2012 को दिल्ली की गैंगरेप वाली घटना दिल दहला देने वाली है। खैर! नारी अब पूरी तरह अपनी शक्ति को पहचान कर बडा से बडा काम करने मे भी पीछे नहीं है आज धरती से लेकर आसमाँ तक नारी छायी हुई है अर्थात अंतरिक्ष मे भी अपना योगदान दे रही हैं। सभी उच्च पदो पर आसीन हो रही है। पुरुषो के साथ कदम - से - कदम मिला कर चल रही है।

इस प्रकार हम पाते है कि आज की नारी के लिए दुनिया का काम असंभव नहीं है। नारी आज सर्वगुण सम्पन्न है बस जरुरत है उसकी आत्मविश्वास, मनोबल को बनाए रखने की। सिर्फ पूजा करने से कुछ नहीं मिलता है परन्तु सम्मान, इज्जत या आदर दे कर हम नारी के अस्तित्व को बचा एवं बढा सकते है।

8

4)

बेतिया
18.03.2013

सेवा में,

आदरणीय संपादक महोदय,

हिन्दुस्तान, बेतिया

विषय :- महिलाओं के विरुद्ध हो रहे अत्याचारों को रोकने के संबंध में।

महोदय,

आपसे सविनय निवेदन यह है कि मैं जूही कुमारी कक्षा - बारहवीं की छात्रा हूँ। मैं आपके समाचार - पत्र के द्वारा महिलाओं के विरुद्ध महानगरों में हो रहे अत्याचारों एवं अभद्र व्यवहारों को रोकने के संबंध में कुछ कहना चाहती हूँ। आप अपने सामाचार पत्रों के द्वारा इस अत्याचार को रोक सकते हैं। इसके लिए आपको पुलिस को इस बारे में सचेत करना चाहिए तथा महिलाओं के सुरक्षा के इन्तजाम करना चाहिए।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आप जल्द - से - जल्द इस बारे में समाचार पत्र द्वारा जागरूकता फैलाए। इसके लिए मैं सदा आपकी आभारी रहूँगी।

आपकी विश्वासभाजिका
जूही कुमारी
कक्षा - बारहवीं

5) **संपादक** → जो व्यक्ति किसी समाचार पत्र, पुस्तक, या पत्रिका का लेखक होता है, जिसका संदेश समाचार पत्र या पत्रिका के सामने पृष्ठ पर होता है, संपादक कहलाता है।

उसके प्रमुख दायित्व निम्नलिखित है :-

(i) संपादक पर ही किसी समाचार पत्र, पुस्तक या पत्रिका के सफल होने का दायित्व रहता है।

(ii) संपादक ही इन सबका प्रमुख होता है।

(iii) संपादक पर ही किसी व्यक्ति विशेष के बारे मे छपी संदेश की सत्यता की जिम्मेवारी होती है।

(iv) किसी भी समाचार को लिखे जाने पर, उसमें कुछ गलती हो पर संपादक ही इन सबका भोगी होता है।

(v) संपादक सरकारी एवं गैरसरकारी दोनो हो सकते है।

(vi) संपादक समाचार लिखते समय यह ध्यान रखता है कि यह समाचार या संदेश एक बड़े जनसमूह के लिए है जिसमें एक मजदूर से लेकर एक विश्वविद्यालय के कुलपति उसके पाठक है, अतः वह सरल एवं सुलभ भाषा का प्रयोग करता है।

(vii) संपादक अपने कार्यालय द्वारा छापे गए सभी समाचारो का लेखा-जोखा रखता है।

6) क) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की लोकप्रियता के दो कारण निम्नलिखित है :-
(i) यह सुलभ एवं सरल होता है।
(ii) इसके द्वारा हमे सूचना या संदेश कम समय में ही, कभी भी मिल जाती है।

ख) टीवी पत्रकारिता में किसी भी समाचार एवं संदेश की सही-सही जानकारी, कम समयों में, चित्र के साथ दिखाया जाना ही मीडिया की भाषा में 'ऐंकर बाइट' के नाम से जाना जाता है।

ग) किसी भी महत्वपूर्ण समाचार या सूचना या संदेश को कम समय में, जल्द से जल्द टी.वी द्वारा दिखाया जाना 'ब्रेकिंग न्यूज' कहलाती है। यह न्यूज तुरन्त घटी घटना होती है।

घ) पीत पत्रकारिता → पत्रकारिता का ही एक प्रकार का दोष है अर्थात गलत पत्रकारिता जिसके द्वारा व्यक्ति विशेष या समाज का वातावरण खराब होता है, पीत पत्रकारिता कहलाती है।

ङ) समाचार-लेखन के छह ककार है :-
(i) किसके साथ हुआ ?
(ii) कहाँ हुआ ?

(iii) कब हुआ (iv) कैसे हुआ (v) क्यों हुआ (vi) किस तरह हुआ।
यही किसके, कहाँ, कब, कैसे, क्यों, किस तरह को ककार कहा जाता है।

7) प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तिका अंतरा भाग - 2 के 'सरोज स्मृति" पद्य से ली गई। 'सरोज स्मृति' के रचयिता महान कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला" हैं। प्रस्तुत पद्य के माध्यम से कवि अपनी मजबूरी के बारे में बताते हुए अपनी पुत्री सरोज के विवाह की उल्लेख करते हैं।

कवि अपनी पुत्री की विवाह की सभी तैयारियाँ स्वयं करते हुए कहते हैं कि विवाह की इस सुंदर घडी में तुम (सरोज को सम्बोधित करते हुए कहते हैं) बहुत खुश होकर मुझे देख रही हो, जीवन की सुंदर कल्पना में तुम्हारे होठ (अधर) काँप रहे हैं, तुम अपने पति की सपनों मे खोयी आज अलग ही लग रही हो। तुम्हारा पूरा चेहरा खुशियों से सूर्य की भांति दमक रहा है। आँखो में चमक एवं खुशी दोनो ही दिख रही हैं। तुम्हारी यह सुंदर छवि तुम्हारे माँ के समान है। इन पंक्तियो के माध्यम कवि बीच-बीच में अपनी असमर्थता भी व्यक्त करता है कि आज इस मंगलमय घडी मे मैं तुम्हारे के कुछ भी

नहीं कर पा रहा हूँ। मेरे जैसा अभागा पिता शायद ही कहीं हो।

विशेष :—

1) भाषा सरल एवं प्रवाहमान है।

2) खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

3) अंग-अंग पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

---

8) क) 'दीप अकेला' कविता के माध्यम 'अज्ञेय जी' ने हमें मनुष्य एवं एक दीप के बीच के संबंध को बताया है तथा एक दीप के माध्यम से मनुष्य की तुलना की है। कवि ने उसे स्नेहभरा, गर्वभरा और मदमाता इसलिए कहा है क्योंकि :-

(i) एक दीप जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाशित कर रहा है, अत्यंत ही विशिष्ठ है।

(ii) उस दीप में संसार के सभी गुण समाहित हैं अर्थात् वह स्नेहभरा एवं गर्वभरा भी है।

(iii) कवि कहता है कि जिस प्रकार दीप दूसरों के लिए जलता है उसी तुम भी जल कर दूसरों का परोपकार करो।

(iv) हम मनुष्यों को भी दीप की भांति ही कठिन-से-कठिन परिस्थितियों का सामना कर अपनी मंजिल को प्रकाशित करना चाहिए।

ग) राम - वन - गमन के बाद कौसल्या माँ की मनोदशा कुछ इस प्रकार है :-

(i) राम-वन-गमन के बाद कौसल्या की दशा दयनीय हो गई है।

(ii) कौसल्या को बार - बार राम की याद आती है जिससे वे बहुत व्याकुल हो जाती है।

(iii) वे बार - बार सुबह में उनके (राम) के कमरे में उन्हें जगाने चली जाती है और जब उन्हें गलती का अहसास होता है तो वे अत्यंत शोक मे डूब जाती है।

(iv) वे राम के अत्यंत प्यारे घोड़े को पुचकारती हैं तथा उसकी सेवा भी बड़े यत्न से करती है।

(v) राम के वन - गमन से राजा दशरथ की मृत्यु हो गई, जो कौसल्या के दुःख को दोगुनी कर देता है।

vi) माँ कौसल्या प्रतिदिन सभी पथिक, राही से राम को अपना संदेश भेजती हैं। तथा उनकी आँखें राम के इन्तजार में ही रहती हैं

9) ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तिका अंतरा भाग - 2 के 'वसंत आया' पद्य से ली गई है। इसके रचयिता सुप्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय जी हैं।

भाव :- प्रस्तुत पंक्तियो के माध्यम से कवि कहते है कि वसंत के आगमन से सभी पत्ते झर गए थे वे बहुत तेजी से जल रहे है।

(ii) आम मे बौर आई है।

(iii) वसंत के आगमन से ही सभी फलों क रस से भर गए जिसकी गंध चारो ओर फैल गई है तथा इसका बिक्री विदेशो मे हो रही है।

(iv) चारो ओर फूलो के खिलने से हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही है। भौरे मधु एवं फूलो का रस चूसकर मस्त है तथा खुशीपूर्वक अपना करतब दिखा रहे है।

वि अंलकार → (i) दहर - दहर - पुनरुक्ति प्रकाश अंलकार

(ii) रंस - रस - अनुप्रास अंलकार

भाषा → खड़ी बोली

ग) प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तिका अंतरा भाग - 2 के 'बनारस' पद्य से ली गई है इसके रचयिता 'केदारनाथ' है।

भाव: - प्रस्तुत पंक्तियो के माध्यम कवि बनारस शहर की मनोरम दृश्य की विशेषताओं को बता रहे है।

(ii) बनारस मे चारो ओर सुबह से उगते हुए सूरज

को अर्घ्य दिया जाता है।

(iii) सभी गंगा के पवित्र जल में स्नान कर वर्षों से पूजा करते है।

(iv) कोई पानी में तो कोई बाहर पूजा करने मे लगा है।

(v) इस शहर मे आकर सभी दुःख, चिन्ताओ से दूर, लोग अपनी स्वार्थ को दूर रख कर, सच्चे मन से एक टांग पर खड़े होकर अपनी मनोकामना को भगवान के सामने रखते है। यह दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है।

10) प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तिका 'अंतरा भाग - 2' के 'कुटज' पाठ से ली गई है। प्रस्तुत पाठ (कुटज) के रचयिता महान लेखक 'हजारी प्रसाद द्विवेदी जी' है। प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक हिमालय की शिवालिक श्रेणियों में उत्पन्न बहुत ही दुर्लभ पौधे 'कुटज' के गुणो से हमें परिचित करा रहे है। प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहते है कि

(i) कुटज हमारी मानव जाति का प्रेरणा स्रोत्र है।

(ii) यह विषम - विषम परिस्थिति का सामना बहुत ही दृढता से करके अपनो को श्रेष्ठ साबित करता है।

(iii) वह असहायो की तरह भीख नहीं माँगता है बल्कि जरुरत आने पर शत्रु को 'छठी का दूध' याद दिलाता है।

(iv) वह मानव जाति की तरह जाति एवं धर्म का उपदेश न देकर अपने कर्म को महान बनाता है।

(v) वह मनुष्य की तरह दूसरो की गुलामी किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करता है।

(vi) कुटज अपनी मंजिल को पाने के लिए सांसरिक लोभो मे नहीं पड़ता है। वह स्वार्थी भी नहीं है।

(vi) वह अपनी आत्मा की शांति / मन की शांति के लिए मनुष्यों की समान तरह - तरह रत्नों की अँगुठियों को नहीं पहनता या मानता है।

इस प्रकार हम देखते है कि कुटज अपनी नीतियो को सर्वोपरि मानते हुए शान से जीता है।

12) क) फणीश्वरनाथ रेणु ने संवदिया के माध्यम से बड़ी बहुरिया की पीड़ा को पूरी सहानुभूति प्रदान की है। इसमे बड़ी बहुरिया का चित्रांकन इस प्रकार किया जाता है।

(i) बड़ी बहुरिया सहनशील एवं शांत स्त्री है।

(ii) उसके लिए अपनी इज्जत एवं मर्यादा सर्वोपरि है।
(iii) वह बहुत स्वाभिमानी भी है। अतः वह दूसरों के भरोसे अपना जीवन नहीं जीना चाहती है।
(iv) बड़ी बहुरिया स्वभाव की बहुत अच्छी है जिससे अपने देवरों द्वारा बेईमानी किए जाने पर भी वह कुछ नहीं कहती है।
(v) वह दूसरों का भला चाहती है।
(vi) किसी का भी उधार रखना नहीं चाहती है।
(vii) वह अपनी जिंदगी मेहनत करके बिताना चाहती है। अतः वह अपने मायके में ही झूठा - बरतन करने के लिए तैयार होती है
(viii) उसे अपने गाँव एवं हवेली की मान - मर्यादा का भी बहुत ख्याल है इसलिए अंत में वह पुनः उसी गाँव एवं हवेली में रहना चाहती है।

ग) रामचंद्र शुक्ल के निबंध के आधार पर चौधरी प्रेमघन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-
(i) चौधरी प्रेमघन बहुत ही रईस एवं खानदानी व्यक्ति है।
(ii) इसके घर होली, वसंत आदि अवसरों पर दोस्तों को दावत दी जाती है।

(iii) चौधरी जी का अपने नौकरों से बात करने का तरीका दिलचस्प है। जब कुछ गिर जाता है तो वे पूछते हैं कारे कुछ क्या तो नाहीं।

(iv) ये अपने पड़ोसियों को भी उल्लू बनाने से बाज नहीं आते है। एक बार जब इनके एक पड़ोसी घर आते है तो ये पूछते है घनचक्कर के क्या मायने होता है?

(v) चौधरी हिन्दी साहित्य के महान लेखक एवं कवि है जिसका उदाहरण/प्रयोग ये अपने जीवन में करते है।

(vi) ये नागरी भाषा को ही मानते है। और इसका प्रयोग करने पर जोर देते है।

(vii) ये स्वभाव से विनोदी किस्म के है।

12) जयशंकर प्रसाद :-

कार्यकल (1888 ई - 1937 ई०)। जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी में 1888 ई० में हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा आठवी कक्षा तक ही हो पायी। बाद में इन्होंने स्वाध्याय द्वारा ही अन्य भाषाओं जैसे अंग्रेजी, उर्दू, फारसी

आदि भाषाओं के विद्वान बने। इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। बाद मे पूर्ण रूप से ये गद्य एवं पद्य लिखने लगे। ये स्वभाव से विनम्र थे।

रचनाएँ :-

इनकी प्रमुख रचनाओं में अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, लालिमा, तितली आदि हैं।

काव्यगत विशेषताएँ :-

(i) ये बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग अपनी काव्यो मे करते थे

(ii) अलंकारो का बहुत कम प्रयोग करते थे। इनकी रचनाओं से सामाजिक जीवन की बारे मे जानकारी मिलती है।

(iii) इन्होंने अनेक प्रकार के गद्य, पद्य, कहानी, नाटको एवं उपन्यासो की रचना की है।

(iv) इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त है।

---

13 ख) 'आरोहण' मे महीप 8 वर्ष का छोटा बालक था। यह बालक शैला एवं भूप का बेटा था जो पहाडो पर रहते थे। जब यह आठ वर्ष का था तो इनकी माँ शैला पहाडो से कूद कर आत्महत्या कर ली थी, तब से यह घर से भाग कर

कर अकेला ही रहता था।
वह अपने बारे मे पूछे प्रश्नों को इसलिए टाल देता था कि
(i) वह नहीं चाहता है कि उसका ७प सिंह से संबंध
उजागर हो।
(ii) वह अपने पिता से रिश्ता नहीं रखना चाहता है।

ग) भिस्कोहर की मारी मे भयंकर गरमी और लू से बचने के लिए
किए जाने वाले उपायों का विवरण निम्न है :-
(i) आम का उपयोग → A) कच्चे आम का पाना पी कर
B) कच्चे आम को आग मे पका
रख चटनी खाने से।
(ii) प्याज द्वारा → कच्चा प्याज खाने से भयंकर गरमी मे
लू से बचा जा सकता है।

14) क) भैरो ने सूरदास की झोपडी में आग लगा दी और रुपयों
की थैली चुरा ली, फिर भी रुपयों के बारे मे पूछे जाने पर
वह बार-बार झूठा बोलता है। एक अच्छे और ईमानदार
व्यक्ति के द्वारा झूठ बोलने की इस विवशता के पीछे मेरे

विचार से निम्न कारण हो सकते है !—
(i) वह नहीं चाहता है कि लोग उसके ईमानदारी के बारे में जाने।
(ii) उसे दुनिया के सामने अच्छे बनने की नहीं पड़ी है।
(iii) वह अपनी जिन्दगी बहुत ही सरल ढंग से जीना चाहता है।
(iv) वह शायद अपनी अच्छाइयों को दुनिया की बुरी नजर से बचा कर रखना चाहता है।
v) वह इस जालिम दुनिया की करतूतों से पूरी तरह वाकिफ है कि यहाँ उगते सूर्य को नमस्कार किया जाता है।
vi) वह नहीं चाहता है उसके चलते गरीब के नाम पर कोई गरीबों का विश्वास नहीं करे।

ख) सूरदास ने उसी बालोचित सरलता से उत्तर दिया — तो हम भी सौ लाख बार बनाएँगे। इस कथन में निहित जीवन-मूल्य इस प्रकार है :—
(i) कोई भी मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं होता है। छोटी या बड़ी होती है तो उसकी सोच, दृढ़शक्ति।
(ii) अगर एक अपाहिज व्यक्ति भी चाहे तो वह अपनी कर्मशक्ति से सामान्य मनुष्यों को 'सूरदास' की तरह पीछे छोड़ सकता है।

(iii) अगर दृढ़संकल्प हो तो कोई भी काम असम्भव नहीं है।

(iv) अगर व्यक्ति को अपने पर भरोसा हो और आगे बढ़ने की लालसा हो, कोई भी दुनिया की ताकत उसे हरा या पराजित या पीछे नहीं कर सकती है।

---

15) हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में विचार निम्न हैं

पक्ष :-

(i) एक तरह जहाँ औद्योगिक विकास हो रहा है, वही दूसरी ओर इसका दुष्परिणाम देखने को मिल रहा है।

(ii) इसके कारण दिन-प्रति दिन पेड़ों की अंधाधुन कटाई हो जाती है।

(iii) औद्योगिक विकास के लिए कितनो को ही बेघर कर दिया जाता है।

(iv) चारो तरफ कारखानो से गंदा धुआ निकलने से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिससे विभिन्न-विभिन्न प्रकार की सांस संबंधी बीमारियाँ हो जाती है।

(v) प्रदूषण के फलस्वरूप ध्रुवों की बर्फ पिघल रहा है।

ओजोन परत की क्षय होती जा रही है।

(vi) औद्योगिक विकास से नदियों का पानी भी बड़ी मात्रा में प्रदूषित हो रहा है जो संकट का कारण है।

(vii) इस औद्योगिक विकास की दौड़ में मनुष्य अपने नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है।

(viii) आगे बढ़ने की होड़ में, वह कम-से-कम समय में ही सब कुछ पा लेना चाहता है।

(ix) मनुष्य इस अंधाधुन दौड़ में किसी भी हद तक जाने को तैयार है।

(x) अब मनुष्य विकास की दौड़ के कारण अपनी भारतीय सभ्यता - संस्कृति भूलता जा रहा है।